नवभारत
जबलपुर, रविवार, 8 फरवरी 2026

कहानी

इंतज़ार करती ज़िंदगी

रेणु गुप्ता

यूनिवर्सिटी में एमए प्रीवियस की शुरुआती क्लास में जियान की नज़रें पहली बेंच पर बैठी एक अति खूबसूरत छात्रा पर पड़ी. उसके भोले मासूम चेहरे पर कुछ ऐसी कशिश थी कि न चाहते हुए भी जियान की नज़रें बरबस रह-रह कर उसकी ओर उठ रही थीं. उस लड़की का नाम हिया था.

अगले ही दिन जियान ने हिया से हाय-हेलो की. फ्री पीरियड में दोनों में जम कर गप-शप हुई और दोनों को ही यूँ लगा जैसे वे न जाने कितने पुराने फ्रेंड्स हैं.

बाय बाय हिया, कल मिलते हैं. हिया से विदा लेते वक़्त जियान को लगा मानो वह उसके पास अपना दिल छोड़ कर जा रहा हो. 'शायद पहली नज़र का प्यार यही है. कितनी कशिश भरी पर्सनालिटी है इस लड़की की, कि पहली ही मुलाक़ात में उसने मेरा दिल चुरा लिया... ' यही सब सोचते-विचारते जियान घर की ओर चल दिया.

हिया की सम्मोहक शख्सियत के अनूठे औरा में गुम जियान देर रात तक उसी के बारे में सोचता रहा था. वह अपनी बाईस साल की मैच्योर उम्र में एक टीन एजर की भाँति क्यों रिएक्ट कर रहा है, उसकी समझ से परे था. हिया का भोला भाला नमकीन चेहरा मानो उसके ज़ेहन में फ्रीज़ हो गया था. 'शायद उसे उससे मोहब्बत हो गयी है', जियान ने मुस्कुराते हुए सोचा और कस कर आँखें मूँद लीं, लेकिन आँखें बंद करने के बावजूद उनकी चिलमन में हिया का मासूम सौन्दर्य उससे अठखेलियाँ करने लगा था और वह देर रात सो पाया.

वक्त के साथ हिया और जियान की दोस्ती गहरी हो चली थी. पहले ही दिन से जियान उसकी मोहब्बत में कैद हो गया था, जो दिनों-दिन परवान चढ़ती जा रही थी, लेकिन वह हिया की फीलिंग्स से अनजान था कि क्या वह भी वही महसूस करती है, जो वह फ़ील करता है? कभी वह अप्रत्यक्ष तौर से उससे अपनी मोहब्बत का इज़हार भी करता, तो वह जान कर भी शायद अनजान बन जाती. उसे कोई जवाब नहीं देती.

वक्त का परिंदा अपनी उड़ान भरता गया था और देखते-देखते उनका एमए प्रीवियस और फिर फाइनल पूरा हुआ.

यूनिवर्सिटी के आखिरी दिन हिया और जियान पास के सेन्ट्रल पार्क में नरम हरी दूब पर बैठे हुए गपिया रहे थे.

कल से तुम कहाँ और मैं कहाँ होऊँगा. जिया तुमसे अलगाव का सोच-सोच कर मेरा दिल बैठा जा रहा है.

हूँ, अब तो हम दोनों का रोज़ाना मिलना नहीं हो पाएगा.

हाँ, कॉम्पटीशन्स की तैयारी जो करनी है.

तभी जियान ने उसके दोनों हाथ थाम लिए और उससे कहा, हिया, वायदा करो, लाइफ़ में सेटल होने के बाद तुम मुझसे ही शादी करोगी. क्या, शादी और तुमसे? ये क्या कह रहे हो जियान? हम बहुत अच्छे दोस्त हैं और हमेशा रहेंगे. ये अपने बीच शादी कहाँ से आ गई? मैंने तो तुम्हें कभी इस नज़र से देखा ही नहीं.

ये क्या हिया. क्या तुम्हें आज से पहले कभी अंदाज़ा नहीं हुआ कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ. मैं अपनी पूरी ज़िंदगी तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ. इसमें गलत क्या है? गलत तो कुछ नहीं, लेकिन मुझ से शादी करके तुम खुश नहीं रह पाओगे, सच कह रही हूँ. ये क्या कह रही हो? हम दोनों की मेंटल वेव लेंथ कितनी मिलती हैं. हम एक दुसरे का साथ कितना एंजॉय करते हैं. नहीं... नहीं... मैं तुमसे अलग होकर ज़िंदा नहीं रह पाऊँगा. बस, तुम मुझसे प्रॉमिस करो कि तुम मुझ से ही शादी करोगी. तभी अपने होंठ भींच हिया ने बेहद गंभीरता से उससे कहा, मैं तुमसे तो क्या, किसी से शादी नहीं कर पाऊँगी, कहते हुए वह बरबस डबडबा आई आँखों से वहाँ से उठ कर तेज़ चाल से पार्क के बाहर चल पड़ी कि तभी जियान ने उससे पूछा, ये तुम क्या कह रही हो? आखिर हमारी शादी में अड़चन क्या है?

मैं तुम्हें ये नहीं बता सकती. नहीं, तुम्हें मुझे बताना होगा. जियान ने उसका हाथ थाम उससे इसरार किया.

जवाब में हिया ने आँसुओं से मलिन चेहरे से उससे कहा, तुम इतनी ज़िद कर रहे हो तो सुनो, मुझे आँखों की ऐसी सीरियस बीमारी है कि मैं अगले कुछ बरसों में पूरी तरह से अपनी आई साइट खो बैठूंगी. अब बताओ, क्या तुम एक अंधी लड़की के साथ अपनी पूरी ज़िंदगी बिता पाओगे? कहते हुए हिया तेज चाल से पार्क के बाहर अपनी स्कूटी स्टार्ट कर वहाँ से चलती बनी थी.

इधर हिया की ये बात सुन जियान के ज़ेहन में भीषण उथल पुथल मच गई थी. वह सोच रहा था, एक ब्लाइंड वाइफ़ के साथ पूरी ज़िंदगी गुजारना आसान तो नहीं होगा लेकिन वह हिया को इतना चाहने लगा है कि अब मोहब्बत की डगर पर आगे बढ़ने के अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं. सो बहुत आत्म मंथन के बाद वह इस निर्णय पर पहुंचा कि वह हिया को ही अपना हमसफ़र बनाएगा. उसका बढ़िया से बढ़िया इलाज करवाएगा.

एक पखवाड़े के बाद उस दिन वैलेंटाइन डे था. जियान के बहुत आग्रह पर हिया ने उस दिन एक बढ़िया रेस्त्रां में मिलने का वायदा किया. हिया और जियान एक टेबल पर बैठे ही थे कि तभी जियान ने अपने घुटने पर बैठते हुए उसकी ओर एक सुर्ख गुलाबों का बुके बढ़ाते हुए उसे प्रोपोज़ किया, मैं दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की को अपना दिल दे चुका हूँ. क्या तुम ज़िंदगी की आखिरी सांस तक मेरे दिल को संभालना चाहोगी?

जियान... मुझसे शादी एक घाटे का सौदा रहेगा.

आई डोंट केयर. आई रिपीट, क्या तुम मेरी लाइफ़ पार्टनर बनोगी? लेकिन जियान... तुम्हें अच्छी से अच्छी लड़की मिल जाएगी. तुम बेवकूफ़ी कर रहे हो.

श्शशश, बस मेरी बात का जवाब दो और कुछ हँसते कुछ रोते, जियान को यस कहते हुए हिया ने उसके दिए बुके को चूम लिया था. वक्त सुनहरी धुप की तरह ढलता गया.

दोनों जियान और हिया ज़िंदगी में अच्छी तरह सेटल हो गए और दोनों के रिश्ते पर विवाह का ठप्पा लग गया.

दोनों बेहद मगन थे, लेकिन हिया भीतर ही भीतर बहुत डर रही थी. बेस्ट ट्रीटमेंट के बावजूद गुज़रते दिनों के साथ उसकी दोनों आँखों की रोशनी धीरे-धीरे जा रही थी.

उस दिन हिया सुबह सवेरे उठी तो उसे अपने चारों ओर अँधेरे का आभास हुआ. उसकी दृष्टि पूरी तरह से जा चुकी थी. वह एक जोरों की चीख के साथ जियान के सीने से जा लगी.

जियान हिया को उसके डॉक्टर के पास ले गया. डॉक्टर ने उनसे कहा था, आपकी आई साइट वापस लाने के लिए आपको किसी डेड पर्सन की कॉर्निया लगाई जा सकती है, लेकिन हाल फिलहाल शहर के आई बैंक्स में आपसे मैच करती कॉर्निया उपलब्ध नहीं हैं. इसके लिए आपको इंतज़ार करना पड़ेगा.

अपने से मेल खाती कॉर्निया के लिए प्रतीक्षा करते हुए हिया को पूरा साल हो गया. जियान ने हर कदम पर उसके अँधेरे दिनों में अपनी मोहब्बत का उजास भरा. आखिरकार उनका सब्र काम आया और उसका कॉर्निया ट्रांसप्लांटेशन का ऑपरेशन सफल रहा. आज फिर से वैलेंटाइन डे है, और ऑपरेशन के बाद आज ही उसकी आँखों की पट्टी खुलनी है.

डॉक्टर ने उसकी पट्टी खोली और उसे अपनी आँखें खोलने को कहा. हिया ने हौले से अपनी आँखें खोलीं और धुंधली दृष्टि से सामने देखा. हर बार की तरह जियान एक सुर्ख गुलाबों के महकते गमकते बुके के साथ उसके सामने था. वे दोनों हाथों में हाथ थाम चल पड़े थे, कि तभी हिया बुदबुदाई, थैंक्स सो मच, मुझे अपनी ज़िंदगी में शामिल करने के लिए. थैंक्स सो मच आपका, आप मेरी ज़िंदगी में आईं. दोनों मुस्कुरा उठे. एक हँसती खिलखिलाती ज़िंदगी बाँहें फैलाए उनका इंतज़ार कर रही थी.

क्लास by बड़े भाई

क्या इतना समय है आपके पास?

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

आप किसी काम के लिए बढिया तैयार होकर निकले हैं, रास्ते में चलते हुए किसी से आपको धक्का लग जाता है, आपसे किसी को धाकटा लग जाता है तो क्या आप इसे नजरंदाज़ करके या क्षमा मांगकर आगे नही बढ़ सकते?

अगर नही बढ़ सकते तो याद रखिये जीवन में आगे बढने में यह हमेशा एक रास्ते को घेरे पत्थर की तरह रहेगा. अगर भूलकर आगे बढ़ जाने और क्षमा मांग लेने में आपको कायरता लगती है तो आप वहां बेझिझक बहादुरी दिखा सकते हैं, भिड सकते हैं, झगडा कर सकते हैं लेकिन आपकी इस तरह की प्रवृत्ति की बड़ी कीमत चुकानी होगी.

यह बात किसी विद्वान् ने बड़े ढंग से कही है उन्होंने कहा कि अगर जिंदगी में असफल होना है तो रास्ते में हर कुत्ते को पत्थर मारना शुरू कर दो.

छोटे भाई, जो आपके लक्ष्य के आड़े न आए उसे जीवन में कभी मत रखिये, जैसे भी बने उससे किनारा करिये. उलझकर जीवन का अमूल्य समय मत गंवाइये. आज हर कहीं आप पायंगे लोगों ने वो मसले पालकर बैठे हैं जिन्हें वो सहज ही टाल सकते है , उससे किनारा कर सकते थे लेकिन उन्होंने उसे ही प्राथमिकता दी हुई है. ऐसे लोगों का मुख्य लक्ष्य उनसे कोसों दूर होता जाता है. जीवन का अमूल्य समय यदि छोटी छोटी बातों के पाले में डाल दिया तो फिर क्या रहा. इसका सीधा सा मतलब होता है कि आपको कुछ बड़ा करने का प्रयास करना ही नहीं था या फिर कुछ बाद पाने को लेकर गंभीर नहीं हैं आप.

छोटे भाई बस इतना कहना चाहता हूँ कि जीवन में छोटी छोटी बातों में स्वयं को मत उलझाइए. अपना लक्ष्य याद रखिए और अपना समय उसी को पाने के जतन में दीजिए. जब भी कभी ऐसा लगे , स्वयं से अपना लक्ष्य याद करते हुए यह सवाल पूछिए क्या इतना समय है आपके पास ?

व्यंग्य

गप्पबाज़ की असाधारण प्रतिभा

रेखा शाह आरबी

गप्प फेंकना एक प्रतिभा है . यह एक असाधारण कला है . एक उच्च कोटि की मानसिक जिमनास्टिक है . कुछ इंसान अपनी मानसिक फिटनेस बनाए रखने के लिए इसका इस्तेमाल करते है. इससे उनकी सेहत चुस्त दुरुस्त और तंदुरुस्त रहती है. गप्प फेंकना गप्पे बाज के लिए दवाई है.

जिसमें ना तथ्य चाहिए, ना सबूत चाहिए ,ना प्रमाण चाहिए, ना तर्क चाहिए . और ना ही कोई व्यर्थ की बहसबाजी चाहिए. बस चाहिए तो एक समन्दर के जैसे उछलता हिलोरें लेने वाला आत्मविश्वास चाहिए . लगातार बिना थके बोलने की क्षमता चाहिए .और एक मजबूर सीधा-साधा भोला -भाला श्रोता चाहिए .और बस आप अपनी गप्प फेंकने की दुकान लगा सकते हैं .

गप्प फेंकने वाला महान प्राणी होता है . वह उन जगहों के बारे में भी एकदम आत्मविश्वास के साथ बता देता है . जहां पर वह कभी पैर नहीं रखा हो . या उन तथ्यों के बारे में भी बता देता है. जिन पुस्तकों को कभी हाथ भी नहीं लगाया हो. वह उन चीजों के बारे में भी सटीक बात कर सकता है . जिन चीजों को कभी देखा नहीं हो. गप फेंकने वाले की एक महान कला और होती है .उसे दुनिया का सब कुछ आता है बस एक चीज नहीं आता है उसे चुप रहना नहीं आता है. किसी और से ज्ञान की बात सुनना नहीं आता है. यही एकमात्र उसकी कमजोरी होती है .बाकी हर जगह उसका आत्मविश्वास उच्च दर्जे का होता है. गप्पबाज की सबसे बड़ी प्रतिभा होती है कि अक्सर वो वह चीज भी सुन लेता है . जिसे दुनिया में कोई व्यक्ति नहीं सुना होता है. इसलिए उसकी बातचीत अक्सर इस बात से शुरू होती है कि सुना है ! और सुना है यह इतना शक्तिशाली होता है कि सुनने वाला भी सच मानने को मजबूर हो जाता है कि वह व्यक्ति वहां पर था .

और सबसे मजेदार बात है कि आजकल का आधुनिक गप्पे बाज व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी का परमानेंट छात्र होता है . वहां पर वह रोज अपनी क्लास लगता है और रोज क्लास लेता भी है. अब समझ लीजिए वह कितना हाई क्लास होता है. इस क्लास में उम्र कोई मायने नहीं रखती है. एक पक्का गप्पेबाज किसी भी उम्र का हो सकता है. उम्र के आखिरी पड़ाव पर का भी हो सकता है. उसके मुंह में भले ही दांत ना हो लेकिन उसकी बातें आपको चबा-चबा कर निगलनी पड़ेगी.

आप उससे सवाल पूछने की गलती मत कीजिए. क्योंकि वह डॉक्टर से ज्यादा ज्ञान रखता है . वैज्ञानिकों से ज्यादा तर्क रखता है. और प्रोफेसर से ज्यादा विद्वान होता है . आप उसके ज्ञान का मुकाबला नहीं कर सकते हैं चाहे आप जितने भी पढ़े लिखे हो. आप उसके आत्म विश्वास का मुकाबला नहीं कर पाएंगे . हर बार आप ही शर्मिंदा होंगे और सोच में पड़ जाएंगे की सच में मैं ही तो गलत नहीं हूं. और आपका आत्मविश्वास बेचारा गोते लगाने लगेगा.

वैसे ऐसे लोग भी समाज में बेहद जरूरी है . वरना चाय की दुकानों पर सन्नाटा हो जाएगा. जो चाय पीते समय बतरस की दुकान छानते हैं. वह सुना -सुना रह जाएगा. और चाय फीकी लगने लगेगी. शादी ब्याह में टाइम काटे नहीं कटेगा. दूल्हा तो दुल्हन के लिए जाएगा .और कुछ खाने पीने वाले लोग खाने के लिए जाएंगे . लेकिन यदि आप खाने-पीने में बहुत ज्यादा रुचि नहीं रखते हैं . तो यही गप्पेबाज लोग आपका समय हंसी खुशी निकालेंगे.

और राजनीति तो इनके बगैर श्मशान के जैसे सुनी हो जाएगी . जहां भूत डोलेंगे .और सोशल मीडिया तो बिल्कुल अनाथ ही हो जाएगा. आखिर ऐसी दुनिया का आप क्या करेंगे . जिसमें कोई मजा और मनोरंजन ना हो .

क्योंकि यदि गप्पे बाज नहीं रहेंगे तो आधे झगड़ा आधे मजे और पूरे के पूरे टीवी डिबेट खत्म हो जाएंगे. जैसे जिंदगी में थोड़ा सा नमक जरूरी होता है . क्योंकि जिंदगी में स्वाद तो चाहिये. उनके बिना जिंदगी का स्वाद फीका हो जायेगा . इस तरह अपने आसपास एक गप्पेबाज का रहना भी बहुत जरूरी है . गप्पबाज ना पूरी तरह बुरा होता है. ना पूरी तरह अच्छा होता है .समस्या तब होगी यदि आप गप्प बाजी को ज्ञान समझ लेंगे .और उसके झूठ को उसका आत्मविश्वास समझते हैं .तो अपने आप के ऊपर विश्वास कीजिए और गप्पेबाज के साथ मिलकर हंसी खुशी जिंदगी में आनन्द उठाइए .

कविता

एक और दुनिया

अमेय कांत

एक समांतर संसार हमने
खुद रच दिया है
जो बनाकर दे रहा है अपने
मौलिक चेहरे

ये देखते हैं हमारी तरफ़
आश्वस्त करते हुए हमें
अपने लगातार बेहतर होते
जाने को लेकर

उनका आश्वस्त करना
खबरदार करने जैसा भी लगता है
कभी-कभी

अपनी सुगढ़ देह में
इठलाती हुई वह सुंदर लड़की
नहीं है मौजूद किसी भी जगह
संयोग से मिल जाए किसी से उसकी सूरत
तो बात अलग है
पर उसके चेहरे पर वह गर्वीली मुस्कान
कमाल है इंटरनेट पर मौजूद बेहिसाब डेटा
और किसी जटिल एल्गोरिदम का

उस बूढ़े आदमी के चेहरे की झुर्रियाँ
और आँखों की उदासी

एक %प्रॉम्प्ट% के अधिक से
अधिक
सटीक होने का खेल है

प्लेटो होते अगर आज
तो क्या कहते इसके बारे में?
शायद %थ्राइस रिमूव्ड फ्रॉम
रियालिटी !%
या फिर कह देते हार मानते हुए
कि मानव रच सकता है एक
और दुनिया

यह एक और दुनिया
तेज़ी से जगह बना रही है हमारे बीच
फैलते जा रहे हैं इसके किरदार
हमारी असली दुनिया में
इसका हिस्सा बनते हुए

मशीनें बेशक बनाती रहें
हमारी नकलें
भरती रहें चेहरों के बीच के फ़र्क को
बस बचा रहे हमारे भीतर का एल्गोरिदम
ताकि असल आँखों में झाँकें हम जब भी
तो पढ़ सकें प्रेम या भूख को
साफ़-साफ़

कविता

अपने अहं को

संदीप राशिनकर

अपने
अहं को
आकाश कर
तुम तोड़ते
मरोड़ते रहे
और
बनाते , बिगाड़ते रहे
रेखाओं को
वक्त के
नियति के रक्त के !
मगर
कौन तुम्हे समझाए
कि
जो सार्वभौम है
सशक्त है
वह कुछ और नहीं
वक्त है
और
रक्त नियति का भी
है लाल जर्द
श्वेत नहीं है
तुम कर रहे हो
जिससे खिलवाड़
वह
महज रेत नहीं है !!

लघुकथाएं

आगंतुक की माया

बसंत राघव

विष्णु के इने-गिने मंदिरों में वह भी एक मंदिर था. बहुत कम लोग पूजा के लिए वहां जाते थे. वहां का पुजारी मंदिर परिसर के पीछे खाली जगह में बागवानी के नाम पर अपने और परिवार के लिए कुछ सब्जियां और धान की खेती कर लिया करता था. उसमें मुश्किल से घर का गुजारा होता. एक दिन पुजारी को मंदिर के अंदर कहीं से एक बार्न आउल पक्षी का बच्चा डरा सहमा बैठा हुआ दिखाई दिया. पुजारी के लिए वह किसी वरदान से कम न था. उसने मंदिर में आये आगंतुक (भक्त) से कहा हमारे मंदिर में गरुड़ देवता साक्षात् प्रकट हुए हैं! फिर क्या था सोशल मीडिया के जमाने में यह बात आग की तरह दूर दूर तक फैल गई. हजारों लाखों की संख्या में श्रद्धालु आने लगे. दर्शन के लिए लम्बी लम्बी कतारें. यहां तक कि यातायात पुलिस को सड़कों पर बैरिकेड्स लगाने पड़े. समाजिक संगठनों के द्वारा टेंट की व्यवस्था की गई. मंदिर के दरवाजे पर बड़ा सा पर्दा डाल दिया गया, जिसमें दर्शन के लिए जालीनुमा खिड़की बनायी गयी. जोरशोर से पूजा-पाठ होने लगा .

चढ़ावा का अम्बार लग गया.

आज पंडित जी बहुत खुश थे,होते भी क्यों नहीं, पाँच दिन पूर्व आए उस लाल बुझक्कड़ ने उनका काम जो सिद्ध कर दिया था. और लोग बार्न आउल के बच्चे (उल्लू) को गरुड़ समझ रहे थे.

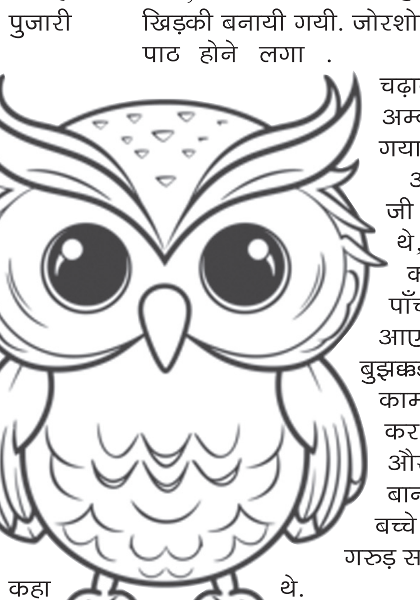

सोच

अविनाश अग्निहोत्री

मां मै सालों से आपको देख रहा हूं.आप सदैव खुद को व्यस्त रखती है.पर मेरा मानना है कि रिटायरमेंट के बाद अब तो आपको अपने शरीर को कुछ आराम देना चाहिए.

अथर्व ने बागवानी में पौधे लगाती अपनी मां से कहा.तब वो मुस्कुराकर बोली, बेटा आराम के लिए भगवान ने रात बनाई तो है.

दिन में तो हमें इस शरीर से खूब काम लेना चाहिए.तभी तो रात में इस थके शरीर को आराम का सुख मिलेगा न.

मां के कहे ये शब्द,अथर्व की सोच बदलने के लिए काफी थे.

मजबूरी

पापा पहले तो आप कहते थे कि मेरा सबकुछ तुम्हारा ही है.

मैं इतना काम कर ही किसलिए रहा हूं.पर अब इस बुढ़ापे में आपको ये क्या हो गया है. जो घर के सब लोगों से पाई पाई का हिसाब मांगते फिरते है.

क्या भैया भाभी और उनके बच्चे आपके अपने नहीं जो आप ये सब करते है.

बड़े दिनों बाद मायके आई मीनू ने अपने पिता से शिकायती लहजे में पूछा.

बेटा तुम तो जानती ही हो तुम बच्चों का पालन पोषण अच्छे से कर सके इसलिए मैंने जीवनभर खूब मेहनत की.

तब सोचता था कि बैठूंगा कभी अपने परिवार के साथ, करूंगा उनसे बातें.पर शायद अब मेरे लिए किसी के पास फुर्सत ही नहीं है.

बस इसीलिए मैंने उन सभी से रुपयों का हिसाब पूछना शुरू कर दिया है.ताकि इसी बहाने सही वे सभी बारी बारी मेरे पास कुछ देर बैठे तो सही.

उन्होंने रुंधे गले से मीनू से कहा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी